पार्किन्संस बीमारी में गतिय उतार-चढ़ाव

पार्किन्संस बीमारी में कई बार ऐसा होता है कि जब लक्षण अच्छी तरह से नियंत्रण में होते हैं और ऐसा लगता है कि दवाई अच्छी तरह से काम कर रही है - इसे "ऑन" टाइम कहा जाता है। कई बार लक्षण अच्छी तरह से नियंत्रण में नहीं होते- इसे "ऑफ" टाइम कहा जाता है। गतिय उतार- चढ़ाव का अर्थ यह है वह स्थिति जब पार्किन्संस बीमारी से पीड़ित व्यक्ति "ऑन" टाइम और "ऑफ" टाइम के बीच में बार- बार आता-जाता है। "ऑन" तथा "ऑफ" टाइम के बीच में जाने के समय को समझना बहुत ही महत्वपूर्ण है और इससे किसी व्यक्ति को अपनी दवाई लेने के बारे में और दवाई के प्रभाव को समझने में सहायता मिलती है।

लक्षणों के नियंत्रण में अन्य परिवर्तन लेवोडोपा के अवशोषण(absorption) के समय पर देखा जाता है जब किसी व्यक्ति को बेचैनी से गतियों का अनुभव होता है जिन्हें डिस्काइनेसिस कहा जाता है- ऐसा प्रतीत होता है कि हलचल "बहुत ज्यादा" थी।

वियरिंफ ऑफ शब्द का प्रयोग सामान्यतया एक खुराक के प्रभाव के खत्म होने से अगली खुराक के बीच के समय के लिए किया जाता है। अर्थात पिछली खुराक का लाभकारी प्रभाव समाप्त होना दिखाई देने लगता है। वह समय जब "ऑन" टाइम समाप्त हो जाता है और "ऑफ" टाइम अधिक स्पष्ट दिखाई देता है। डॉक्टर वियरिंग ऑफ के प्रभावों को निम्न की सलाह देकर कम कर सकता है-

- **लेवोडोपा की कम पर अधिक बार खुराकें ।**
- **दूसरी प्रकार की लेवोडोपा का प्रयोग जिससे दवाई अधिक बार निकलती है।**
- **लेवोडोपा की टेबलेटों को चबाना या उन्हें कार्बोनेटिड ड्रिंक्स के साथ लेना ताकि उनके असर की गति बढ़ाई जा सके**
- **भोजन के साथ लेवोडोपा को नहीं लेना**
- **कब्ज का इलाज**

वियरिंग ऑफ के लक्षणों को कम करने का दूसरा विकल्प है एक दूसरी दवाई (MAO-B inhibitor/dopamine agonist/COMT inhibitor) को मिलाना। किसी दूसरी दवाई को इस प्रकार मिलाने को कॉम्बीनेशन थेरेपी कहा जाता है।

गति में होने वाले उतार-चढावों का इलाज करना एक बहुत ही जटिल प्रक्रिया है इसे प्रत्येक व्यक्ति के लक्षणों और खुराकों के अनुरूप बनाए जाने की आवश्यकता है । इसलिए इसे आपके डॉक्टर की सलाह पर ही किया जाना चाहिए। आपको अनुभव होने वाले उतार-चढावों को समझने में आप अपने डॉक्टर की सहायता कर सकते हैं। इसके लिए आप दिन में किसी भी अवधि के लिए अपने वियरिंग ऑफ पीरियड को रिकार्ड करें।